एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कद्दू वर्गीय सब्जियों के सन्दर्भ में

(*आत्मा राम मीणा एवं रामधन चोपदार)
विद्यावाचस्पति छात्र, एस. के. आर. ए. यू., बीकानेर, राजस्थान – 334006
*meenaatm3737@gmail.com

कुकुरबिटेसी (कद्दू वर्गीय) कुल सब्जियों(ग्रीष्मकालीन सब्जियों) में सबसे बड़ा कुल माना जाता हैं जिसका उपयोग विश्वभर में मुख्यतः खाने (सलाद) व सब्जियों के रूप में किया जाता हैं। इस कुल की सब्जियों के अंतर्गत 118 जेनेरा एवं 825 के लगभग स्पेशीज मानी जाती है। कुकुर्बिटेसी कुल की सब्जियों के अन्तर्गत आनुवंशिक विभिन्नता अधिक् देखने को मिलती है। सामान्यतया सब्जियों के रूप में इस कुल के पौधो का अपरिपक्व फल खाने योग्य कम में लिया जाता है।

भारत में बरसात के दिनों में नदियों के किनारों का भू-भाग खाली पड़ा रहता है, इस भू- भाग का उपयोग ग्रीष्मऋतू में इस कुल की फसलो को उगाकर किया जाता है। इससे किसान को आमदनी के साथ-साथ खाद्य सामग्री का भी खाफी हद तक समाधान हो जाता है एवम बेकार भूमि का भी उपयोग अच्छी तरह हो जाता है। जिन क्षेत्रो में कम पानी होता है उन क्षेत्रो के लिए इस कुल की फसले अधिक उपुक्त मानी जाता है।

वर्गीकरण

क्र.स.	फसल का नाम	गुणसूत्र संख्या	उदभव	बीज की दर (कि.ग्रा./हे.)	उत्पादन (क्विंटल/हे.)
1	खीरा	2n=14	भारत	2.2-2.5	100-125
2	लोकी	2n=22	द. अफ्रीका	4-5	300-420
3	करेला	2n=22	इंडो-बर्मा	6-7	80-120
4	कद्दू	2n=40	मेक्सिको	3-4	300-500
5	खरबूजा	2n=24	अफ्रीका	2.5-3.0	150-200
6	तरबूज	2n=22	अफ्रीका	4.0-5.0	250-300
7	टिंडा	2n=22	अफ्रीका	5-6	80-120

भूमि का चुनाव

कद्दू वर्गिये फसलो के लिए सामान्य उपजाऊ दोमट मिटटी के साथ–साथ अच्छी जल निकास वाली मिट्टी अधिक अनुकूल होती है जिसका pH मान 6.0-6.7 रहे। जल भराव वाली भूमि इस कुल की फसलो के लिए अनुपयुक्त मानी जाती है।

जलवायु

इसके लिए हल्का आर्द्र एवम धूप युक्त तापमान की जरुरत होती है। आर्द्रता में कमी आने पर फल छोटे आकर के व फल बनने के तुरंत बाद ही झड़ने लग जाते है I जिससे कृषक को नुकसान के साथ-साथ बेचने में भी काफी परेशानी देखने को मिलती है I

कद्दूवर्गिये फसलो के वृद्धि एवम फलों के विकास के लिए तापमान का बहुत अधिक प्रभाव देखने को मिलता है। ज्ञात सूत्रों के आधार पर पौधे एक विशेष उपयुक्त तापमान पर ही जमीन से पानी के साथ-साथ पोषक तत्वो की अधिकतम मात्रा को ग्रहण कर पाते है।

तापमान में उतार-चढ़ाव के साथ-साथ पौधों की पानी व पोषक तत्वों की भी शोषण करने की क्षमता पर प्रभाव देखने को मिलता है। तापमान में उतार-चढ़ाव के कारण फूलों का बनना, फूलों का खिलना एवम् परागण कीक्रिया भी एक विशेष अनुकूल तापमान 32-35 डिग्री सेल्सियस पर ही सम्पन्न हो पाती है I अधिक वर्षा का होना भी इस कुल की फसलो के लिए बीमारियों (सडन-गलन एवम कीटो का भी) का कारण बन सकता है।

बुवाई का समय

अच्छी आमदनी प्राप्त करने के लिए किसान को इस कुल की सब्जियो को फरवरी का अंतिम सप्ताह या मार्च के शुरुआत में ही बुवाई कर देना चाहिए I जब रात का तापमान 12-16 डिग्री सेल्सियस के मध्य रहता है। तर ककड़ी व कद्दू की बुवाई दिसम्बर-जनवरी में की जाये तो और भी उपयुक्त रहता है तथा वर्षा ऋतू की फसल के लिए मध्य जून से जुलाई माह तक कर सकते है I

बुवाई की विधि

इस कुल की फसलो के बीजो को छोटी-छोटी पोलीथीन की थैलियो उपयुक्तमाना जाता है, जिसमे बराबर मात्रा में खाद, मृदा व बालू को भरदे तथा थेलियो में 3-4 छोटे-छोटे छेद बना दे जिससे अधिक पानी बाहर निकल सके। प्रत्येक पोलीथीन बेग में 2-3 बीज बोये या फिर सतह से 15-20 से.मी. ऊपर उठी हुए 3 मीटर चोडी मेड या क्यारिया उपयुक्त मानी जाती है तथा क्यारीयों में 60 से.मी. के अन्तराल पर 2-3 बीज बोये I

बीजोपचार

बुवाई से पहले बीजो को 2-3 ग्राम बाविस्टिन से उपचारित करने पर कीटो एवम रोगों (डैपिंग आफ़) का असर कम देखने को मिलता है I

खाद व उर्वरक

फसल बुवाई से पूर्व 15-20 टन/हेक्टेयर पूर्ण रूप से सडीहुए गोबर की खाद को खेत में डालकर मिट्टी पलटने वाले हल की सहायता से एक समान तरीके से मिट्टी मेंअच्छी तरह मिलाकर समतल कर दे। इसके अलावा 80:50:50 के अनुपात में रासायानिक उर्वरक NPK देना भी उपज के लिए फायेदेमंद माना जाता है I

सिंचाई

सामान्यतया कद्दू वर्गिये फसलो में अधिक पानी की आवश्यकता नही होती है लेकिन फसल की आवश्यकतानुसार समय-समय पर निराई-गुड़ाई के साथ-साथ हल्की सिंचाई उपयुक्त मानी जाती है।

कीट एवम रोग

क्र.स.	कीट का नाम	उपचार
1	लाल कद्दू भृंग (*रेफिडोपाल्पा (एल्युकोफोरा)* फोविकोलिस)	प्रभावी तरीके से नियंत्रण करने के लिए 0.05 प्रतिशत मैलाथियान का छिड़काव करे 5 प्रतिशत कार्बोरिल या 4 प्रतिशत एण्डोसल्फान या5 प्रतिशत मैलाथियान चूर्ण 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की दर से भुरकाव भी इस कीट का प्रभावी नियंत्रण करा जा सकता है।
2	फलमक्खी (*बेक्ट्रासेरा कुकरबिटी*)	इसके उपचार के लिए डाईक्लोरवास (DDVP) या एसिफेट @ 2g/ली.पानी का छिडकाव करे बेलों के नीचे समय-समय पर गुड़ाई करते रहना चाहिये, इससे भूमि में उपस्थित प्यूपा नष्ट हो जाते हैं।
क्र.स.	**रोग का नाम**	**उपचार**
1	फल विगलन (*पिथियम अफैनीडर्मेटम, फ्यूजेरियम*)	डाइथेन-एम-45 नामक कवक नाशी का0.25 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए
2	रोमिलफफूंद (*स्युडोपेरीनोस्पोरा क्यूबेन्सिस*)	जैसे ही रोग के लक्षण या आक्रमण दिखाई दे डाइथेनएम-45 या ब्लीटॉक्स 0.25 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए तथा 15 दिन के अन्तर पर दूसरा छिडकाव करे।
3	मूल-ग्रन्थिरोग (*लाइडोगाइन जावनिका*)	इसके उपचार के लिए फसलों में नेमागोल 2.5 गैलन प्रति हैक्टर छिडके।
4	झुलसा (*आल्टरनेरिया*)	डाइथेनएम-45 का 0.25 प्रतिशत घोल बनाकर अच्छी तरह से छिड़काव करे ।
5	चूर्णीफफूंद (*एरिसाइफी, सिकोरेसियेरम*)	इसके लिए कैरोथेन नामक रसायन उपयुक्त पाया गया है। इसका 0.05 प्रतिशत का घोल बनाकर 15-15 दिन के अन्तर में छिड़काव किया जाता है।
6	फ्यूजेरियमग्लानी (*फ्यूजेरियम*)	बैविस्टीन से उपचारित करके बीजों को बोना चाहिए। 25 ग्राम रसायन एक किलोग्राम बीज में डालना चाहिए।